दुःख के क्षणों को समभाव से सहे

-युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 12 फरवरी 08-

हमारे जीवन में द्वंदात्मक परिस्थितियां आती है। कभी कोई प्रशंसा करता है तो कोई निंदा भी कर देता है। लाभ, अलाभ, सुख, दुख आदि द्वंदात्मक परिस्थितियों से दुनियां में कोई बच नहीं सकता। जब दुःख और सुख आना स्वाभाविक है तो फिर दुःख के क्षणों में अवसाद में चले जाने और सुख के पलो में अहंकार में डूब जाने से क्या फायदा? उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ के उ□ाराधिकारी शिष्य युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में प्रवचन के दौरान व्यक्त किए।

उन्होंने आगे बताया कि 'जीवन की यात्रा में साधु समता की साधना को पुष्ट करें तथा आहार न मिलने पर क्षुब्ध न हो और यह भावना रखे कि प्रतिदिन आहार करता ही हूं आज सहज तपस्या हो जाएगी।' यह अनुचिंतन वृद्ध की लकड़ी की तरह साधना का सहारा बनती है। जो लोग कभी रूष्ट और कभी तुष्ट होते है उनकी यह आदत भंयकर परिणाम देने वाली होती है। युवाचार्य महाश्रमण ने साधना के सार को उपशम बताते हुए कहा कि 25 साल की दीक्षा पर्याय वाले साधु-साध्वियों को आगम ब□ीसी का पारायण करना चाहिए। आगमों का बार-बार अध्ययन होता है तो भावों में स्थितप्रज्ञता और समता का निर्माण हो जाता है। बाहरी पदार्थों की दुनियां में उलझकर रह जाने वाले परमत□व की अनुभूति किसी भी कीमत पर नहीं कर सकते। जीवन में मुश्किलें नहीं आए ऐसा कहना असंभव है लेकिन मुश्किलों से घबराकर घुटने टेकने के बजाय हंसते हुए मुकाबला करने का साहस अपने भीतर पैदा करे। कठिनाईयां हमारा इम्तिहान लेती है। कभी-कभी कठिनाईयां हमारे व्यक्तित्व को निखारने का निमि□ा बन जाती है बशर्ते उनसे डर कर रास्ते बदले ना जाये। महातपस्वी ने गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की मासिक तिथि पर स्मृतिमय उद्गार में कहा कि उनका आत्मबल बेजोड़ था। मुसीबतें हमेशा उनका दामन थामें रहती थी लेकिन उन्होंने शांत भाव से हर परिस्थिति का सामना किया। यही वजह थी कि आचार्य तुलसी ने प्रसन्नता का जीवन जीया और इसी प्रसन्नता ने सफलता के रास्ते खोल दिये।

युवाचार्य ने आगे कहा कि परिस्थिति प्रसन्नता को खंडित करती है लेकिन जिसका संकल्पबल मजबूत होता है परिस्थितियां उन्हें कभी प्रभावित नहीं कर सकती। महानता उन्हीं का दामन थामती है जो मुस्कराते हुए मुसीबतों का मुकाबला करते हैं।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस ने मुनि मधुकर द्वारा रचित भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति देते हुए आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि दिनेश ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

नोट :- उपरोक्त समाचार की फोटो ई-मेल द्वारा प्रेषित की जा चुकी है।